International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialresearchjournals.com
Volume 2; Issue 12; January 2016; Page No. 103-105

स्वामी विवेकानन्द का हिन्दुत्व

विरेन्द्र सिंह

शोधार्थी, पी. एच. डी., राजनीतिक विभाग, कलिंगा विश्वविधालय, रायपुर, छतीसगढ़, भारत।

प्रस्तावना

हिन्दुत्व : ऐतिहासिक युग के पूर्व केवल तीन ही धर्म संसार में विधमान हैं – हिन्दू धर्म, पारसी धर्म और यहूदी धर्म। ये तीन धर्म अनेकानेक प्रचण्ड आघातों के पश्चात भी लुप्त न होकर आज भी जीवित हैं– यह उनकी आन्तरिक शक्ति का प्रमाण है। पर जहाँ हम ये देखते है कि यहूदी धर्म ईसाई धर्म को न पचा सका, वरन सर्व विजयी सन्तान–इन्साई धर्म द्वारा अपने जन्म स्थान से निर्वासित कर दिया गया, और यह है कि केवल मुठ्ठी–भर पारसी ही अपने महान धर्म की गाथा गाने के लिए अब अवशेष है– जहाँ भारत में एक के बाद एक अनेकों धर्म पन्थों का उद्भव हुआ और वे पन्थ वेदप्रणीत धर्म को जड़ से हिलाते से प्रतीत हुए, पर भयंकर भूकम्प के समय समुद्री किनारे की जलतरंगों के समान यह धर्म कुछ समय के लिए पीछे हट गया किन्तु वह तत्पश्चात हजार गुना अधिक बलशाली होकर सम्मुखस्थ सब को डुबाने वाली बाढ़ के रूप में लौट आये, और जब यह सारा कोलाहल शान्त हो गया, तब सारे धर्म – सम्प्रदाय अपनी जन्मदात्री मूल हिन्दू धर्म की विराट काया द्वारा आत्म सात् कर लिए गये, पचा लिये गये।

हिन्दू जाति ने अपना धर्म वेदों से प्राप्त किया है। उनकी धारणा है कि वेद अनादि और अनन्त है। श्रोताओं को, सम्भव हैं, यह हास्यास्पद मालूम हो और वे सोचें कि कोई पुस्तक अनादि और अनन्त कैसे हो सकती है। परन्तु वेद का अर्थ भिन्न कालों मे भिन्न–भिन्न व्यक्तियों द्वारा आविष्कृत आध्यात्मिक तत्वों का संचित कोष। जिस प्रकार गुरूत्वाकर्षण का सिद्धान्त मनुष्यों के पता चलने के पूर्व अपना काम करता चला आ रहा है और आज यदि मनुष्य जाति उसे भूल भी जाए तो भी वह नियम अपना काम करता रहेगा, ठीक वही बात आध्यात्मिक नियमों के सम्बंध में भी है। एक आत्मा का दूसरी आत्मा के साथ और प्रत्येक आत्मा का परम पिता परमात्मा के साथ जो नैतिक तथा दिव्य आध्यात्मिक सम्बन्ध हैं, वे हमारे पता लगाने से पूर्व भी थे, और हम यदि भूल भी जाएँ तो तो भी रहेंगे।

हिन्दू जाति के इतिहास में केवल सदा निर्माण का प्रयत्न रहा है, विनाश कभी नहीं किया गया। एक सम्प्रदायों वालों ने विनाश करना चाहा और वे भारत से बाहर निकाल दिये गए, वे बौद्ध थे। हमारे यहाँ से सुधारक–शंकर, रामानुज और चैतन्य हुए हैं। ये महान सुधारक थे, जो सदा निर्माता रहे और उन्होने अपने समय की परिस्थिति के अनुसार निर्माण किया। यह काम करने की हमारी विशिष्ट विधि। सब आधुनिक सुधारक यूरोप के विनाशात्मक सुधार की नकल करना चाहते हैं, इससे न कभी किसी की भलाई हुई और और न होगी। केवल एक आधुनिक सुधारक हुए हैं, जो अधिकतर निर्माता रहे और वे थे राजा राम मोहन राय। हिन्दू जाति की प्रगति वेदांती आदर्शों को प्राप्त करने की दिशा में रही है। भारतीय जीवन का समस्त इतिहास वह प्रयत्न है, जो उसने सुख अथवा दुःख में होकर वेदान्त के आदर्शों तक पहुँचने के लिए किया है। जब कभी कोई ऐसा सुधारवादी सम्प्रदाय अथवा धर्म उदित हुआ, जिसने वेदान्ती आदर्श की अवहेलना की, तो उसे नष्ट–भ्रष्ट कर दिया।

वर्तमान युग का हिन्दू युवक, सनातन धर्म के अनेक ग्रन्थों की भूल–भुलैयों में भटका हुआ, उस एक मात्र हिन्दू धर्म को जिसकी सार्वजनिक उपयोगिता तदुपदिष्ट 'अनोरणीयान् महतो महीयान्' ईश्वर का यथार्थ प्रतिबिम्ब हैं, उस धर्म के मर्म को, अपनी भ्रमात्मक पूर्व धारणाओं और दुराग्रहों के कारण ग्रहण करने में असमर्थ होने से, जिन राष्ट्रो ने भौतिकता के सिवाय कभी भी और कुछ नहीं जाना, उनसे आध्यात्मिक सत्य का पुराना पैमाना उधार लेकर अँधेरे में टटोलता हुआ, अपने पूर्वजों के धर्म को समझने का व्यर्थ का कष्ट उठाता हुआ अन्त में उस खोज को बिल्कुल त्याग देता है और या तो वह निपट अज्ञेयवादी बन जाता है या अपनी धार्मिक प्रवृति की प्ररेणाओं के कारण पशु–जीवन बिताने में समर्थ नहीं हो पाता और पाश्चात्य भौतिकता के पौवत्यि गंधधारी कसायों का असावधानी के साथ पान करके क्षुति की भविष्यवाणी 'परियनित मूढ़ा अन्धेनैय ीयमाना यथान्थाः' को चरितार्थ करता है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार हिन्दू धर्म विभिन्न मत–मतान्तरों पर विश्वास करने मात्र न होकर प्रत्यक्ष अनुभूति तथा साक्षात्कार पर आधारित है। उनके शब्दों में– ''केवल विश्वास का नाम हिन्दू धर्म नहीं है, हिन्दू धर्म मूल मन्त्र है, मैं आत्मा हूँ, यह विश्वास होना और स्वरूप बन जाना है।''

अतः हिन्दूओं की सारी साधन प्रणाली का लक्ष्य– सतत् अध्ययन द्वारा पूर्ण बन जाना है। ईश्वर के निकट जाकर उसके दर्शन कर लेना, और इस प्रकार ईश्वर सान्निध्य को प्राप्त होकर उनके दर्शन कर लेना, उन सार्वलोक पिता ईश्वर के समान पूर्ण हो जाना– यही असल में हिन्दू धर्म है और जब मनुष्य पूर्णत्त्व को प्राप्त कर लेता है, तब उसका क्या होता है? तब वह असीम आनन्द का जीवन व्यतीत करता है। वह अन्य समस्त लाभों की अपेक्षा उत्कृष्ट स्वरूप परमानन्द धाम ईश्वर को प्राप्त करके परम आनन्द का अधिकारी हो जाता है।

स्वामी जी ने धर्म का व्यापकतम अर्थ लेते हुए सार्वभौम धर्म का प्रतिपादन किया। उन्होंने कहा कि विभिन्न दर्शन पद्धतियों में कोई विरोध न हो और वेदान्त एकता के लक्ष्य को खोजने के अतिरिक्त कुछ नहीं है तथा वह एक सफल प्रयास है। उन्होंने वैश्विक प्रेम, प्यार और सेवा की भावना में प्रवाहित होते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा है कि धर्म विध्वंसात्मक नहीं, निर्माणात्मक है। सार्वभौम धर्म को प्राप्त करने का मार्ग यह नहीं है किसी एक धर्म को अपना कर दूसरे धर्म की निन्दा की जाए। प्रत्येक धर्म में अपना–अपना दर्शन, पुराण और कर्मकाण्ड है। सबका अपना–अपना महत्त्व है। फिर भी यही नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्यों के स्वभाव भी भिन्न–भिन्न है अर्थात कोई विचारक है तो कोई दार्शनिक, कोई भक्तिवादी है तो कोई रहस्यवादी तो कोई कर्मकाण्डी है। यही कारण है कि योग के ध्यान योग, राजयोग, हठयोग, भक्तियोग, और कर्मयोग आदि कितने ही भेद बताए जाएं जबकि लक्ष्य सबका एक है और वह है– आत्मा की प्राप्ति।

स्वामी जी हिन्दू धर्म को धर्मों की जननी मानते थे, और इस बात को कुछ सीमा तक इतिहास द्वारा प्रमाणित किया जा सकता है। प्राचीन वैदिक धर्म ने बौद्ध धर्म को प्रभावित किया था और बौद्ध

धर्म इसाई धर्म के उदय में एक शक्तिशाली तत्व था। वैदिक धर्म ने ईरान और मीडिया के धर्मों को प्रभावित किया था और छठी शताब्दी ई.पू. में जूडिया में जो सुधारवादी आन्दोलन चला, उसके कुछ पहलू पश्चिमी एशिया के धर्मों से प्रभावित हुए थे। इन धर्मों के सम्बंध में यहूदियों को उस समय जानकारी हुई थी जब वे बाबुल (बेबीलोनिया) में बन्दियों के रूप में रह रहे थे। मिस्र तथा पश्चिमी एशिया के इतिहास में जो शोध हो रही है, उससे सिद्ध हो रहा है कि प्राचीन धर्म उन दूरवर्ती प्रदेशों में प्रवेश हो चुका था। तेल–अल–अमर्ना में जो पत्र (1380–1350 ई. पू. के लगभग) उपलब्ध हुए थे, उनमे वैदिक नामों का उल्लेख है। उदाहरण के लिए 'अर्तमन्य' शब्द 'ऋतु प्राचीन का परिवर्तित रूप है। (ए.बी. कीथ, इण्डियन हिस्टोरीकल क्वार्टली, 1936, पृ. 573) त्रयत् प्राचीन भारतीय दर्शन की महत्वपूर्ण धारणा है मितनी देवताओं के नाम निश्चय ही हिन्दू देवताओं के नाम है।

विवेकानन्द, वैदिक धर्म से लेकर सम्पूर्ण धर्म के प्रतिनिधि थे। उन्होंने वैदिक संहिताओं पर उतना बल नहीं दिया जितना स्वामी दयानन्द ने दिया था। उन पर उपनिषदों के ज्ञान काण्ड का अधिक प्रभाव था। विवेकानन्द का सार्वभौमवाद अशोक की उदार संस्कृति का स्मरण दिलाता है। उनका पालन पोषण उनके गुरू रामकृष्ण के प्रभाव के अन्तर्गत हुआ था और रामकृष्ण का सम्पूर्ण व्यक्तित्त्व इस बात का घोतक प्रमाण था कि सभी धर्मों में आध्यात्मिक सत्य निहित है। स्वामी विवेकानन्द ने हिन्दूओं में विधर्मियों को अपने धर्म में सम्मिलित करने की प्रथा अशंत पुन प्रारम्भ कर दी। यह प्रथा अनेक शताब्दियों से प्रायः समाप्त हो गयी थी।

स्वामी जी ने कहा कि ''समस्त धर्म ईश्वर की उन्नत शक्ति का केवल विभिन्न प्रकाश है और वे मनुष्यों का कल्याण कर रहे हैं– उनमें से एक भी नहीं मरता, एक को भी विनिष्ट नहीं किया जा सकता। समय के प्रभाव से वे उन्नति और अवनति की ओर अग्रसर हो सकते है। परन्तु उनकी आत्मा या प्राण– वस्तु उनके पीछे मौजूद है। वह कभी विनिष्ट नहीं होता, इसलिए प्रत्येक धर्म ज्ञात भाव से अग्रसर होता जा रहा है।'' विवेकानन्द किसी भी रूप में साम्प्रदायिकता और धार्मिक द्वेष के पक्ष में नहीं थे। उनका कहना था कि हमें ''सतर्क रहकर चेष्टा करनी होगी कि धर्म से किसी संकीर्ण सम्प्रदाय की सृष्टि न हो पाए। इससे बचने के लिए हम अपने को असाम्प्रदायिक सम्प्रदाय बनाना चाहेंगे। सम्प्रदाय से जो लाभ होते है। वे भी उसमें मिलेंगे और साथ ही साथ सार्वभौमिक धर्म का उदार भाव भी उसमें होगा। धार्मिक संकीर्णता से ऊपर उठते हुए विवेकानन्द ने घोषणा की।

''प्रत्येक सम्प्रदाय जिस भाव से ईश्वर की आराधना करता है, मैं उनमें से प्रत्येक के साथ ही ठीक उसी प्रकार से आराधना करूंगाँ। मैं मुसलमानों के साथ मस्जिद में जाऊँगा, ईसाइयों के साथ गिरजे में जाकर फ्रसविद ईसा के सामने घुटने टेकूगाँ, बौद्ध के मन्दिर में प्रवेश कर बुद्ध और संघ की शरण लूँगा और अरण्य में जाकर हिन्दूओं के पास बैठ ध्यान में निमग्न हो, उनकी भाँति, सबके ह्रदय को उद्भाषित करने वाली ज्योति के दर्शन करने में सचेष्ट होऊँगा। केवल इतना ही नहीं, जो पीछे आएँगे, उनके लिए भी हम ह्रदय उन्मुक्त रखेंगे। क्या ईश्वर की पुस्तक समाप्त हो गई? अथवा कभी भी वह क्रमशः प्रकाशित हो रही है? संसार की यह आध्यात्मिक अनुभूति एक अद्भुत पुस्तक है। बाईबिल, वेद, कुरान तथा अन्यान्य धर्मग्रन्थ–समूह मानो उसी पुस्तक में एक–एक पृष्ठ है और उसके असंख्य पृष्ठ अभी भी प्रकाशित हैं। मेरा ह्रदय उन सबके लिए उन्मुक्त रहेगा।''

विवेकानन्द की परिभाषा के अनुसार हिन्दू धर्म वह नैतिक बल है जो व्यक्ति और राष्ट्र को शक्ति प्रदान करता है। उन्होंने गरजते हुए शब्दों में कहा था, ''शक्ति जीवन हैं, दौर्बल्य मृत्यु है।'' जवाहर लाल नेहरू ने अपनी भारत की खोज में बताया कि स्वामी जी की शिक्षाओं का सार अभयम् था। मुण्डकोषनिषद में कहा गया है, ''नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः।'' विवेकानन्द क्षत्रियों के पुरुषत्त्व और ब्राह्मणों की बौद्किता का समन्वय करना चाहते थे। उन्होंने अपने को दुर्बल बनाने वाली रहस्यात्मक भावनाओं से दूर रखा। मैलमैद ने अपनी पुस्तक 'स्पिनोजा एण्ड बु'' में यहूदी धर्म तथा हिन्दू धर्म का अन्तर बतलाया है। उनका कहना है कि यहूदी धर्म व्यक्ति वादी, आस्तिक एवं आशावादी था और विश्व को मानव केन्द्रित मानता था। इसके विपरीत हिन्दू धर्म सार्वभौमवादी निराशावादी, ब्रह्मण्डकेन्द्रि तथा विश्व का निषेध करने वाला था। ये सामान्य निष्कर्ष भारतीय इतिहास और दर्शन के उथले अध्ययन पर आधारित है। मौर्य साम्राज्य तथा मराठा राजतन्त्र के निर्माता कोरे भावुक व्यक्ति नहीं थे। विवेकानन्द अद्धैतवादी होते हुए भी लोकिक क्षेत्र में ओजस्वी तथा साहसपूर्ण कर्म के समर्थक थे और उन्होंने वीरतापूर्वक इस बात का सन्देश दिया कि निरपेक्ष शूरत्व तथा दृढ़ और साहस पूर्ण विश्वास इतिहास को हिला दें।

धर्म के क्षेत्र में विवेकानन्द संकीर्णता और रूढ़िवादित को समूल नष्ट कर देना चाहते थे। वे इस धारणा से सहमत नहीं थे कि धर्म अन्धश्रद्धा का विषय है। जिसमें तर्क अथवा युक्ति के लिए कोई स्थान नहीं है। विवेकानन्द ने तो कभी–कभी यह तक कह दिया कि धर्म भी एक विज्ञान ही है। जिस प्रकार प्राकृतिक विज्ञान भौतिक जगत् के सत्यों से सम्बंध है और मनुष्य के आन्तरिक स्वभाव के भव्य नियमों की खोज करता है। दोनों ही एकता के लिए अभियान करते हैं और दोनों ही यघपि विभिन्न दिशाओं से व्यक्ति और जगत के लिए मुक्ति की खोज करते हैं। एक अर्थ में समस्त ज्ञान ही धर्म है, और एक अन्य अर्थ में समस्त ज्ञान ही विज्ञान है।'' पुनश्च, ''धर्म तात्त्विक जगत के सत्यों से उसी प्रकार सम्बन्धित है, जिस प्रकार रसायन शास्त्र और अन्य भौतिक विज्ञान भौतिक जगत् के सत्यों से।'' धर्म की वैज्ञानिकता में विश्वास व्यक्त करते हुए विवेकानन्द ने कहा ''सभी विज्ञानों की अपनी विशेष पद्धतियॉ होती हैं, धर्म वेदान्त भी है उसकी पद्धतियों की संख्या तो और भी अधिक है। क्योंकि उसकी विषय सामग्री भी प्रचुर होती है।''

हिन्दु धर्म का पुनरूत्थान

हिन्दू धर्म के पुनरूत्थान से आपका आनन्द यही स्पष्टतः सूचित करता है। यघपि विदेशियों के आक्रमण की आँधी पर आँधी हतभाग्य के भक्ति–विनम्रमस्तक पर आघात करती चली गई है। यघपि कई शताब्दियों के हमारे उपेक्षा भाव और हमारे विजेताओं के तिरस्कार भाव ने हमारे पुरातन आर्यवर्त के वैभव के प्रकाश को धुँधला कर दिया है, यघपि हिन्दू धर्म रूपी शौध के अनेक भव्य आधार स्तम्भ है, बहु तेरे सुन्दर कमानियाँ और बहु तेरे विचित्रता पूर्ण कोने–कोने से कई सदियों तक जो देश को प्रलयमान करने वाली बाढ़ें आयी, उनमें बहकर नष्ट हो गए, तथापि उसकी नीवं ज्यों की त्यों अटल है– मध्यवर्ती भारवाही सन्धिशिला सुढ़ृढ़ है। वह जिस पर हिन्दू जाति की ईश्वर भक्ति और भूतदया का अपूर्व कीर्तिसत्म्भ स्थापित हुआ है, वह किंचित भी विचलित नहीं हुई, वरन् पूर्ववत् सुदृढ़ और सबल बनी है। जिस ईश्वर का सन्देश भारत तथा समस्त संसार को पहुँचाने का सम्मान मुझ जैसे उनके अत्यन्त तुच्छ और अयोग्य सेवक को मिला है, उन ईश्वर के प्रति आपका आदर भाव सचमुच अपूर्व है। यह आपकी जन्मजात धार्मिक प्रकृति है, जिसके कारण आप उस ईश्वर में और उसके सन्देश में धर्म के उस प्रबल तरंग की प्रथम गुँज का अनुभव कर रहे हैं जो निकट भविष्य में सारे भारत वर्ष पर अपनी सम्पूर्ण अबाध्य शक्ति के साथ अवश्यमेव आघात करेगी और अपनी अनन्त शक्ति सम्पन्न बाढ़ द्वारा हर प्रकार की दुर्बलता और सदोषिता को दूर बहा ले

जाएगी तथा हिन्दू जाति को उठाकर विधि नियोजित उस उच्च आसन पर बिठा देगी जहाँ उसका पहुँचना निश्चित और अनिवार्य है, वहाँ वह भूतकाल की अपेक्षा और भी अधिक वैभवशाली बनेगा, शताब्दियों की नीरव कष्ट–सहिष्णुता का उपयुक्त पुरस्कार पाएगा और संसार की समस्त जातियों के मध्य में अपने उद्देश्य – आध्यात्मिक प्रकृति सम्पन्न मानव जाति के विकास को पूर्ण करेगा।''

भारत के लिए धर्म का महत्व

हमारा पवित्र भारत वर्ष धर्म एवं दर्शन की पुण्य–भूमि है। यही बड़े–बड़े महात्माओं तथा ऋषियों का जन्म हुआ है, यहीं सन्यास एवं त्याग की भूमि हैं तथा यही केवल आदि काल से लेकर आज तक मनुष्य के लिए जीवन के सर्वोच्च आदर्श एवं मुक्ति का द्वार खुला हुआ है।

प्रत्येक राष्ट्र की एक विशिष्टता होती है। अन्य सब बातें उसके बाद आती है। भारत की विशिष्टता धर्म है। समाज–सुधार और अन्य सब बातें गौण हैं। ..... देश का प्राण धर्म है, भाषा धर्म है तथा भाव धर्म है, हमारी पवित्र परम्परा हमारा धर्म है। एक मात्र सामान्य आधार वहीं है और उसी पर हमें संगठन करना होगा। यूरोप में राजनीतिक विचार राष्ट्रीय एकता का कारण है। किन्तु एशिया में राष्ट्रीय एकता का आधार धर्म है। भारत के भविष्य संगठन की पहली शर्त के तौर पर उसी धार्मिक एकता की आवश्यकता है।

विवेकानन्द ने भारतीयों को यह सोचने के लिए विवश कर दिया कि यदि भारत ने अपनी आध्यात्मिकता का परित्याग कर दिया तो उसका विनाश हो जाएगा। उन्होंने कहा– ''ध्यान रखो यदि तुम इस आध्यात्मिकता का त्याग कर दोगे और इसे एक और रखकर पश्चिम की जड़वाद पूर्ण सभ्यता के पीछे दौड़ोगे, तो परिणाम यह होगा कि तीन पीढ़ियों से तुम एक मृत जाति बन जाओगें, क्योंकि इससे राष्ट्र की रीढ़ टूट जाएगी, राष्ट्र की वह नींव जिस पर इसका निर्माण हुआ हैं, नीचे धँस जाएगी और इसका फल सर्वागीण विनाश होगा।

संदर्भ

1. स्वामी विवेकानन्द, हिन्दू धर्म, रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2001, पृ॰–1–2,
2. हिन्दू धर्म के पक्ष में, रामकृष्ण मठ, नागपुर, 1997, पृ॰–35।
3. वही,।
4. विवेकानन्द साहित्य, खण्ड–1, अद्वैत आश्रम, प्रकाशन विभाग 5, डिहि एण्टाली रोड़, कलकत्ता, 2000, पृ0 258
5. स्वामी विवेकानन्द, हिन्दू धर्म, रामकृष्ण मठ नागपुर,, 16वां संस्करण, 2001, पृ0 22
6. विवेकानन्द साहित्य, खण्ड–4, रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2000, पृ. 256
7. स्वामी विवेकानन्द, साहित्य संचयन, रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2001, पृ0 281.
8. डॉ॰ अमरेश्वर अवस्थी, डॉ॰ रामकुमार अवस्थी, पूर्वोक्त, पृ॰–78, 79।
9. डॉ॰ विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, आधुनिक भारतीय राजनीति चिन्तन, आगरा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, तृतीय संस्करण, 1971, पृ॰–579।
10. स्वामी विवेकानन्द, पत्रावली, रामकृष्ठ मठ, नागपुर, 1998, पृ॰–110।